अभ्यास 5 : बुधवार 1 अक्तूबर को 10 बजे से पहले जमा कीजिए।

1. कुछ साल पहले 'जनसत्ता' अखबार में स्त्री-लेखन पर एक लेख छपा, जिसका लिंक नीचे है। इसे पढ़ें और इसमें उठाए गए बिंदुओं की सूची बनाएँ। स्त्री रचनाकारों की रचनाओं के आधार पर इन बिंदुओं पर विस्तार से टिप्पणी करें।

https://www.jansatta.com/sunday-magazine/jansatta-ravivari-is-woman-writing-literature-of-woman-asmita/598718/

2. नीचे सविता सिंह, गगन गिल और तेजी ग्रोवर की कविताएँ हैं। इनमें विषय-वस्तु और भाषा-शैली की खासियत, समानताएँ और फ़र्क पर रोशनी डालें।

प्रेम करती बेटियाँ
- सविता सिंह
www.hindwi.org/kavita/prem-karti-betiyan-savita-singh-kavita

आज भी बेटियाँ कितना प्रेम करती हैं पिताओं से
वही जो बीच जीवन के उन्हें बेघर करते हैं

धकेलते हैं जो उन्हें निर्धनता के अगम अंधकार में
कितनी अजीब बात है

जिनके सामने झुकी रहती है सबसे ज़्यादा गर्दन
वही उतार लेते हैं सिर।

पूरा हो चुका चाँद
- तेजी ग्रोवर
www.hindwi.org/kavita/pura-ho-chuka-chand-teji-grover-kavita

पूरा हो चुका चाँद
झर चुकी सेमल और टेसू की सुर्ख़ी

कनक की पकती हुई लोच में
महुआ की तीक-सी वह कभी-कभी दिख भी जाती है

लंबे कश में बदल देती हुई इस दृश्य के ऐश्वर्य को
फिर दिख जाती है कोई जुएँ बीनती हुई माँ

नीले घर के उघड़े हुए काँधे की ओट में
और लो

वह गई वह नंग-धड़ंग भोर में उड़ती-पड़ती
सूखे बालों के अनमने गोदुए में

अंडों से लबालब भरी हुई।

चींटियाँ
- गगन गिल www.hindwi.org/kavita/chintiyan-gagan-gill-kavita

चींटियाँ अपने घर का रास्ता भूल गई थीं।
हमारी नींद और हमारी देह की बीच वे क़तार बनाती चलतीं। उनकी स्मृति में

बिखरा रहता उनका अदृश्य आटा, जो किसी दूसरे देश-काल ने बिखेरा था। उसे
ढूँढ़ती वे चलती जातीं पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे की ओर। वे अपने दाँत गड़ातीं

हर जीवित व मृत वस्तु में। उनके चलने से पृथ्वी के दुख हल्के होने लगते
कि दिशाएँ घूमने लगतीं, भ्रमित हो। ध्रुव बदलने लगते अपनी जगह। चींटियों

का दुख लेकिन कोई न जानता था।
बहुत पहले शायद कभी वे स्त्रियाँ रही हों।